भारत सरकार

वित्त मंत्रालय

आर्थिक कार्य विभाग

लोकसभा

अतारांकित प्रश्न सं. 2507

(जिसका उत्तर सोमवार 15 दिसंबर, 2025 /24 अग्रहायण, 1947 (शक) को दिया जाना है)

भारतीय रुपये का मूल्यह्रास

2507. श्री आनंद भदौरिया:

श्री वी. के. श्रीकंदन:

श्री अमरा राम:

क्या **वित्त** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह तथ्य है कि भारतीय रुपया नवम्बर, 2025 के तीसरे सप्ताह में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रिकॉर्ड निचले स्तर 89.64 रुपये पर आ गया, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या यह भी सच है कि यह गिरावट घरेलू विदेशी मुद्रा बाजार में अमेरिकी मुद्रा की बड़ी मांग, स्थानीय एवं वैश्विक शेयर बाजार में बिक्री के व्यापक दबाव और व्यापार संबंधी अनिश्चितताओं के कारण हुई, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) भारतीय मुद्रा में अभूतपूर्व गिरावट के क्या कारण हैं और इसे रोकने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किए गए हैं/किए जा रहे हैं;

(घ) अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय मुद्रा में गिरावट को रोकने में सरकार के अक्षम रहने के क्या कारण हैं;

(ङ) भारतीय रुपये को अमेरिकी डालर के मुकाबले स्थिर करने के लिए पिछले एक वर्ष में बेच दिए गए अमेरिकी डॉलर और अन्य विदेशी मुद्रा भंडार का ब्यौरा क्या है;

(च) वर्ष 2014 में रुपये और अमेरिकी डॉलर के बीच विनिमय दर और वर्ष 2025 में वर्तमान विनिमय दर क्या है; और

(छ) क्या सरकार इस गिरावट के कारण देश की वैश्विक स्थिति के प्रभावित होने को लेकर चिंतित है, यदि हाँ, तो इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर

वित्त राज्य मंत्री

(श्री पंकज चौधरी)

(क): भारतीय रुपये (आईएनआर) की विनिमय दर अमेरिकी डॉलर की तुलना में 21 नवंबर, 2025 को ₹89.41/अमेरिकी डॉलर पर बंद हुई। यह दिनांक 1 दिसंबर, 2025 को ₹89.64/अमेरिकी डॉलर के स्तर पर था। इसके अतिरिक्त, भारतीय रुपया दिनांक 4 दिसंबर, 2025 को ₹90.42/अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था।

(ख), (ग) और (घ): विभिन्न घरेलू और वैश्विक कारक, जैसे कि डॉलर सूचकांक में उतार-चढ़ाव, पूंजी प्रवाह में प्रवृत्ति, ब्याज दरों का स्तर, कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव, चालू खाता घाटा आदि, भारतीय रुपये की विनिमय दर को प्रभावित करते हैं। चालू वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान, भारतीय रुपये का मूल्यह्रास व्यापार घाटे में वृद्धि और पूंजी खाते से अपेक्षाकृत कमजोर समर्थन के बीच, अमेरिका के साथ भारत के व्यापार समझौते में चल रहे घटनाक्रमों से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं से प्रभावित हुआ है।

भारतीय रुपये का मूल्य बाजार-निर्धारित है, जिसमें कोई लक्ष्य या विशिष्ट स्तर या बैंड नहीं है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) नियमित रूप से विदेशी मुद्रा बाजार की निगरानी करता है और अत्यधिक अस्थिरता की स्थितियों में हस्तक्षेप करता है। इसके अतिरिक्त, आरबीआई दुनिया भर में प्रमुख घटनाक्रमों की निगरानी करता है जिसका अमेरिकी डॉलर-रुपया विनिमय दर पर प्रभाव पड़ सकता है। अन्य बातों के साथ, इसमें प्रमुख केंद्रीय बैंकों की मौद्रिक नीति कार्रवाई, विश्व भर में जारी प्रमुख आर्थिक डेटा और उनके प्रभाव, ओपेक+ बैठक के निर्णय, भू-राजनीतिक घटनाओं का पता लगाना और विश्लेषण करना, जी-10 और ईएमई मुद्राओं में दैनिक उतार-चढ़ाव आदि शामिल हैं। विदेशी मुद्रा अंतर्वाह को बढ़ाने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए विभिन्न उपायों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- नवंबर 2025 में निर्यातकों को निर्यात ऋण के पुनर्भुगतान में छूट प्रदान की गई थी, जिसके तहत दिनांक 31 मार्च, 2026 तक संवितरित प्री-शिपमेंट और पोस्ट-शिपमेंट निर्यात ऋण के लिए अधिकतम क्रेडिट अवधि एक वर्ष से बढ़ाकर 450 दिन कर दी गई थी।
- अक्टूबर 2025 में, मर्चेंटिंग व्यापार लेनदेन के मामले में विदेशी मुद्रा परिव्यय की समय अवधि को चार माह से बढ़ाकर छह माह कर दी गई थी। इसके अतिरिक्त, सीमा पार व्यापार लेनदेन के लिए इन क्षेत्राधिकारों में किसी बैंक सहित प्राधिकृत डीलर बैंकों को भारत के बाहर भूटान, नेपाल या श्रीलंका में रहने वाले किसी व्यक्ति को भारतीय रुपये में ऋण देने की अनुमति दी गई थी।
- अगस्त 2025 में, भारत के बाहर रहने वाले व्यक्ति जो भारतीय रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार निपटान के लिए एक विशेष रुपया वोस्ट्रो खाते का रखरखाव करते हैं, उन्हें केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों (टी-बिल सहित) में उपरोक्त खातों में अपने अधिशेष रुपये को निवेश करने की अनुमति दी गई थी।
- मई 2025 में, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) को कॉर्पोरेट ऋण प्रतिभूतियों में अपने निवेश के लिए अल्पकालिक निवेश सीमा और संकेन्द्रण सीमा का पालन करने की आवश्यकता को हटा दिया गया था।

(ङ) अक्टूबर 2024 से सितंबर 2025 की अवधि के दौरान भारतीय रिजर्व बैंक के विदेशी मुद्रा बाजार हस्तक्षेपों का विवरण नीचे दिया गया है:

माह	**अमेरिकी डॉलर की शुद्ध बिक्री (-)/खरीद (+) (मिलियन अमेरिकी डॉलर में)**	**₹ समतुल्य (₹ करोड़)**
अक्टूबर 2024	-9,275	-77,969
नवंबर 2024	-20,228	-1,70,630
दिसंबर 2024	-15,150	-1,28,753
जनवरी 2025	-11,139	-95,388
फरवरी 2025	-1,621	-14,024
मार्च 2025	14,355	1,24,586
अप्रैल 2025	-1,660	-14,635
मई 2025	1,764	14,562
जून 2025	-3,661	-31,808
जुलाई 2025	-2,540	-22,267
अगस्त 2025	-7,695	-67,456
सितंबर 2025	-7,910	-69,884

स्रोत:आरबीआई

(च) 31 दिसंबर, 2014 की स्थिति के अनुसार अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की विनिमय दर ₹63.04/अमेरिकी डॉलर और 5 दिसंबर, 2025 की स्थिति के अनुसार ₹89.99/अमेरिकी डॉलर थी।

(छ) मुद्रा का मूल्यह्रास आयातित वस्तुओं के मूल्यों पर उर्ध्वगामी दबाव डालते हुए निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है। तथापि, विनिमय दर मूल्यह्रास का समग्र प्रभाव घरेलू बाजार में अंतर्राष्ट्रीय वस्तु मूल्यों की निकासी की सीमा पर निर्भर करता है।

सरकार आर्थिक विकास और राजकोषीय स्थिरता के लिए उनके निहितार्थ के साथ-साथ विनिमय दर में उतार-चढ़ाव सहित प्रमुख आर्थिक मानदंडों में रुझानों का पता लगाती है। वर्तमान में, भारतीय अर्थव्यवस्था के वृहद आर्थिक बुनियादी तत्व मजबूत बने हुए हैं, जो सुदृढ़ घरेलू मांग, मुद्रास्फीति में कमी, बेहतर कॉरपोरेट तुलन पत्र और दीर्घकालीन राजकोषीय अनुशासन द्वारा समर्थित है।

***